मिथक नाटक और भीष्म साहनी

– डॉ. अशोक बाचुळकर

प्रस्तावना :

भारतीय जनमानस से गहरे में जुडे भीष्म साहनी बीसवीं सदी के प्रमुख रचनाकार रहे हैं। उन्होंने उपन्यास, कहानी, नाटक साहित्य को अनेक रचनाएँ दी हैं। उनकी मान्यता है कि रचनाकार अपनी सृजनात्मक प्रतिभा द्वारा रचना को संवेदना के धरातल पर ऐसे स्थान पर पहुँचा देता है, जहाँ पूरी मानवता का स्वर सुनाई देता है। साहित्य हमें बेहतर इन्सान बनाता है। इन्हीं उद्देश्यों से प्रेरित होकर उन्होंने सृजन किया है।

भीष्म साहनी ने छः नाटकों का सृजन किया है – हानूश, कबिरा खडा बाजार में, मुआवजे, आलमगीर, माधवी और रंग दे बसंती चोला। 'मुआवजे' के अतिरिक्त उनके शेष पाँच मिथक नाटक हैं। जिनका वर्गीकरण इस प्रकार है–

अ) लोककथा पर आधृत
1. हानूश

ब) पौराणिक कथा पर आधृत
1. माधवी

क) इतिहास पर आधृत
1. कबिरा खडा बाजार में
2. आलमगीर
3. रंग दे बसंती चोला

लोककथाएँ, पुराण और इतिहास हमारी धरोहर है। यह धरोहर हमारी परंपरा से ही प्राप्त हुई है। अतः हम परंपरा से कटकर नहीं जी सकते हैं। उससे हमें एक नई जीवन दृष्टि मिलती है। यही कारण है कि भीष्म जी ने पौराणिक, लोककथा एवं इतिहास प्रसंगों, घटनाओं तथा चरित्रों के माध्यम से समकालीन जीवन की व्याख्या की है, मनुष्य को केंद्र में रखकर। उनके मिथक नाटक इस प्रकार हैं–

अ) लोककथा पर आधृत

1. हानूश

भीष्म जी की यह प्रथम नाट्यकृति है, जिसका प्रकाशन सन् 1977 में हुआ। चेकोस्लावाकिया की राजधानी प्राग में सडकों पर घूमते–घूमते एक दिन निर्मल वर्मा ने भीष्म जी को एक मीनारी घडी थी। उस घडी को बनानेवाले को बादशाह ने अजीब ढंग से पुरस्कृत किया था। भीष्म जी को लगा कि इसमें नाटकीय तत्त्व बहुत हैं। तब चेकोस्लावाकिया के दूतावास से संपर्क कर उन्होंने पत्र–पत्रिकाओं की कतरनें प्राप्त की। लोककथा का आधार लेकर भीष्म जी ने इस नाटक में सत्ता के परिप्रेक्ष्य में एक कलाकार की स्थिति को दर्शाया है। ''यह नाटक ऐतिहासिक नाटक नहीं है, न ही इसका अभिप्राय घडियों के आविष्कार की कहानी कहना है। कथानक के दो–एक तथ्यों को छोडकर, लगभग सभी कुछ ही काल्पनिक है। नाटक एक मानवीय स्थिति को मध्ययुगीन परिप्रेक्ष्य में दिखाने का प्रयास मात्र है।'' (हानूश, भूमिका से)

यह नाटक यानी एक संघर्षशील कलाकार की अनुभूतिपूर्ण अभिव्यक्ति है। हानूश का संघर्ष दो स्तरों पर है– एक आंतरिक और दूसरा बाह्य संघर्ष। इसके अंतर्गत उसे शासनसत्ता के साथ–साथ पारिवारिक संघर्ष से भी गुजरना पडता है। बावजूद इसके उसमें छिपा कलाकार उसे स्वस्थ बैठने नहीं देता है। ''यहाँ नाटककार ने व्यावसायिक शक्तियों और धर्म के पारस्परिक संघर्ष और दोनों द्वारा समान रूप से आम आदमी का शोषण करने के षड्यंत्र को जीवंत अभिव्यक्ति दी है।'' (समकालीन हिंदी नाटक और रंगमंच, पृ. 63) कलाकार को किन आर्थिक कठिनाइयों तथा पारिवारिक तनावों में जीना पडता है, इसका मार्मिक अंकन प्रस्तुत नाटक में है।

एक कलाकार तनावों से घिरा एवं अभावग्रस्त होने के बावजूद अपनी स्जनधर्मिता से क्षणभर भी विचलित नहीं होता है। लाभ–हानि की परवाह किए बिना, किसी पुरस्कार की आशा किए बिना वह अपने रचनाकर्म में रत रहता है। वह अपनी रचना में दूसरों को खुशियाँ बाँटता है। देश का सम्मान बढाता है। बदले में उसे क्या मिलता है ? यह एक कलाकार ही समझ सकता है एवं उसे अभिव्यक्त भी कर सकता है। शासन की

निरंकुशता, मनमानी के विरुद्ध भीष्म जी ने लेखनी चलाई है। परिवेश मध्ययुगीन हो या आधुनिक, विदेशी हो या भारतीय–स्थितियों में कोई खास अंतर नहीं है। घडी बनानेवाले हानूश की आँखें नुचवा दी जा सकती हैं। भीष्म साहनी की भी आँखें नुचवा देने या हाथ कलम करवाना कोई कठिन काम नहीं था, क्योंकि शासन कुछ भी कर सकता है और सबसे बडी बात यह की इमर्जेंसी के समय में ऐसा नाटक लिखने का साहस जान खतरे में डालने के समान था।

ब) पौराणिक कथा पर आधृत

1. माधवी

प्रगतिशील लेखक संघ के मध्यप्रदेश के सम्मेलन से लौटते समय रेल में त्रिलोचन जी शास्त्री से भीष्म जी ने माधवी की कथा सुनी। यह कथा मुख्यतः तीन पुरुष पात्रों–ययाती, गालव और विश्वामित्र की भूमिका पर केंद्रित थी, परंतु भीष्म जी ने 'माधवी' में उसे अलग ढंग से प्रस्तुत किया है। ''कथानक के नाते तो महाभारत में वर्णित कथा के ही प्रसंग रखे हैं, परंतु नाटक के केंद्र में माधवी आ गई। यह उसकी ही कहानी है, पितृसत्तात्मक व्यवस्था में स्त्री की अवहेलना और शोषण की कहानी।'' (आज के अतीत, पृ. 239) नाटक की सारी कहानी मिथक के स्तर पर चलती है, परंतु उसमें से नारी के प्रति दृष्टिकोण, पुरुष और स्त्री के बीच पाए जानेवाले संबंधों के भेद, सामाजिक व्यवस्था के रूप में उसकी प्रासंगिकता आदि तत्त्व उभरते हैं।

महाभारत की कथा पर आधारित इस नाटक में पौराणिक कथा के साथ कल्पना तत्त्व का सुंदर समन्वय है। ऋषि विश्वामित्र का शिष्य गालव हठी स्वभाव के कारण शिक्षा समाप्ति पर गुरुदक्षिणा देने की जिद करता है तब कुद्ध होकर विश्वामित्र उससे आठ सौ अश्वमेधी घोडे माँगते हैं। अश्वमेधी घोडों की खोज में गालव राजपाट से निवृत्त राजा ययाति के पास पहुँचता है। तब ययाति दैवी गुणों से संपन्न अपनी पुत्री माधवी को उसके हवाले करता है, यह कहते हुए कि उसे किसी भी राजा को सौंपकर वह आठ सौ अश्वमेधी घोडे प्राप्त कर सकता है।

सच्चाई जानने पर माधवी चुप कैसे रह सकती है ? वह प्रश्न करती है, तब गालव उसे धर्म और नैतिक मर्यादाओं की याद दिलाता है। जो स्त्री गुरुमाता हो उससे विवाह कैसे किया जा सकता है ? पुरुष समाज की इस स्वार्थपरता, दभी एवं दानवी वृत्ति का पर्दाफाश करते हुए वह कहती है, ''कभी–कभी मुझे लगता है मैं कोई दुःस्वप्न देख रही हूँ और मेरे चारों ओर राक्षस और दानव घूम रहे हैं, कर्त्तव्यपरायण दानव...तीनों राजा मेरे बच्चों को साथ लेकर यहाँ पहुँच गए हैं। जैसे मछली पकडने के लिए काँटें में छोटी मछली लगा दी जाती है, वे मेरे बच्चों को मेरे सामने लाकर मुझे प्रलोभन देंगे। सभी कर्त्तव्य के पक्के, सभी महामानव। तुमने मेरे यौवन की आहुति देकर अपनी गुरुदक्षिणा जुटाई है।'' (माधवी, पृ. 85) माधवी एक–एक राजा के यहाँ दुकूल वस्त्र, आभूषण, मंगलसूत्र पहनती गई। सिर पर मुकूट धारण करती गई, उतारती गई, पुनःश्च कौमार्य धारण करती गई। उसकी गोद भरती गई, खाली होती गई। जब वह चौथी बार कौमार्य धारण करने से इन्कार करती है, तब उसे रास्ते से हटाया जाता है, वह भी सम्मानपूर्वक, गुरुमाता का पद देकर। ''महाभारत के अलौकिक से लगनेवाले मिथकीय परिवेश और चरित्रों के उपयोग द्वारा उन्होंने जिस संवेदना को उभारा है, वह अत्यधिक सजीव, सर्वथा प्रासंगिक और आकर्षक रूप में आज भी अपनी सत्यता को प्रमाणित किए हुए है।'' इस पात्र द्वारा पुरुषी प्रवृत्ति पर करारा व्यंग्य किया है भीष्म जी ने। (मिथक और स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटक, पृ. 139)

क) इतिहास पर आधृत

1. कबिरा खडा बाजार में

'कबिरा खडा बाजार में' भीष्म साहनी की ऐतिहासिक नाट्यकृति है। जिसमें मध्ययुगीन संत कबीर के संघर्ष के मूल सामाजिक धरातल को स्थापित किया है। इसमें कबीरकालीन धर्मांधता, अनाचार, तानाशाही आदि के सामाजिक परिप्रेक्ष्य में उनके निर्भीक, सत्यान्वेषी, प्रखर व्यक्तित्व को दिखाने की कोशिश की है। कबीर ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व के धनी थे, जो अपने युग से नहीं, बल्कि वह युग ही उनसे प्रभावित था। वे निर्भीक, क्रांतिकारी थे। वे न केवल सामाजिक, बल्कि जीवन के सभी क्षेत्रों में बदलाव चाहते थे। एक स्वस्थ मानव समाज का निर्माण करना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने तत्कालीन धार्मिक पाखंडी लोगों तथा तानाशाह से भी संघर्ष किया। हिंदू–मुस्लिमों में व्याप्त बाह्याचारों का खंडन किया। इसके साथ ही उनके जीवन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पहलू है– मानवीयता। इन सभी बातों को भीष्म जी ने प्रस्तुत नाटक में समेटा है। इसमें कबीर को उनके काल और परिवेश के संदर्भ में दिखाया है। कबीर का धर्मांधता विरोधी संघर्ष, सांप्रदायिक सद्भाव के प्रयत्न, सामाजिक मान्यताएँ आज भी हमारे

समाज के लिए प्रासंगिक हैं। यह नाटक कबीर के ''जीवन तथा संघर्ष को ही दिखाता है। हाँ, इसमें से जो स्वर फूटते हैं, वे आज भी हमारे लिए प्रासंगिक हैं।'' (मेरे साक्षात्कार, पृ. 134)

अंधेरे में रोशनी की लौ के लिए भटकनेवाले कबीर इस लौ से भटके हुए समाज का पथदर्शन करना चाहते थे। वे तत्कालीन सामाजिक मान्यताओं को उखाड फेंकना चाहते थे, जो समाज के विकास में बाधा बनी हुई थी, जिनके कारण मनुष्य–मनुष्य के बीच खाई निर्माण हो गई थी। यह सच्चाई है कि कबीर की सामाजिक मान्यताओं, आदर्शों को आज भी हम बिना किसी परिवर्तन के अपना सकते हैं। भीष्म जी साहनी ने जानबूझकर 'कबिरा खडा बाजार में' की कथावस्तु का चयन किया है। अर्थात् कबीर जिस तरह का समाज गढना चाहते थे, ठीक वैसा ही समाज भीष्म जी को अपेक्षित था, क्योंकि उनकी दृष्टि में साहित्य और समहित्यकार की भूमिका समाज को सचेत करने में, सत्यान्वेषण में, दिल की ग्रंथियाँ खोलने में एवं हमें बेहतर इन्सान बनाने में है।

मध्यकालीन समाज धार्मिक टकराव, दमन, बाह्याचार एवं पाखंड में ही उलझा हुआ था। शहंशाह सिकंदर लोदी की तानाशाही एवं निरंकुशता के साथ–साथ कोतवाल की अफसरशाही, सांप्रदायिकता, धर्मांधता, शोषण, अन्याय, अत्याचार के विरोध में कबीर विद्रोह कर उठते हैं। यह विद्रोह व्यक्तिगत स्तर पर होते हुए भी अखिल मानवजाति के हित में है। इस प्रकार यह नाटक तत्कालीन परिप्रेक्ष्य में कबीर का विद्रोह, उनकी फक्कडता, मस्तमौलापन, अनथक संघर्ष तथा युप्रवर्तक सोच को हमारे सामने प्रस्तुत करता है। इसलिए मिथक नाटक होने के बावजूव यह नाटक समकालीन भारतीय समाज की विभिन्न विकृतियों से जोड देता है।

2. आलमगीर

मुगल रावंश में उत्तराधिकार का कोई निश्चित नियम नहीं था। राज्य के लिए पिता या भाई को मौत के घाट उतारने की एक परंपरा–सी चली आई थी। शाहजहाँ ने अपने पिता के साथ जैसा सलूक किया, वैसा ही उसके पुत्रों ने उसके साथ किया। शाहजहाँ के जीवन का अंतिम अध्याय बहुत ही करुण एवं ह्रदयविदारक रहा है। शाहजहाँ के चारों पुत्र चार विभिन्न मान्यताओं के प्रतीक थे। शाहजहाँ की बिमारी के बाद चारों लडकों में – जो उदारता, हठाग्रह, विलासिता और अक्षमता के प्रतीक थे। राज्यप्राप्ति तथा उत्तराधिकारी के लिए उसके पुत्रों के बीच परस्पर संघर्ष मुगल इतिहास का रक्तरंजित एवं रोमांचक अध्याय है। विश्व के इतिहास में ऐसा उदाहरण ढूँढने से भी नहीं मिलेगा। शाहजहाँ का द्वितीय पुत्र औरंगजेब तख्त हासिल करता है। सन् 1658 में आगरा पर अधिकार करते ही वह स्वयं को सम्राट घोषित करता है। तत्पश्चात् विधिवत् राज्याभिषेक करा लेता है। अपने बडे भाई दारा को पकडकर वह दिल्ली में लाता है। उलेमा की सहायता से उसे मृत्युदंड दिलवाता है। इन्हीं तथ्यों पर आधारित है 'आलमगीर'। जिसमें नाटककार ने दिखाया है कि धार्मिक हठाग्रह एवं संकीर्णता किस प्रकार उदारता पर विजय प्राप्त करती है।

यह एक चरित्रप्रधान नाटक है। इसमें नाटककार ने कल्पना का प्रश्रय बहुत कम लिया है। लगता है ऐतिहासिक तथ्यों की जकड में नाटक जकडा हुआ है।

3. रंग दे बसंती चोला

जालियाँवाला बाग कांड की 75 वीं सालगिरह पर नेशनल बुक ट्रस्ट ने भीष्म जी को बच्चों के लिए उक छोटी–सी सूचनाप्रधान पुस्तक लिखने के लिए कहा। भीष्म जी ने आवश्यक जानकारी प्राप्त की। काँग्रेस द्वारा स्थापित समिति की गांधी जी द्वारा लिखी गई रिपोर्ट पढ ली। फिर एक छोटी–सी पुस्तक लिखने के बाद उन्होंने उसे नाटक का रूप दिया। जालियाँवाला बाग कांड पर आधारित यह नाटक सिखों के अमर बलिदान की कहानी है।

यह एक ऐतिहासिक नाटक है जिसमें ब्रिटिश पात्रों और उधमसिंह के अलावा अन्य काल्पनिक हैं। नाटककार ने इन काल्पनिक पात्रों में इस तरह प्राण फूँक दिए हैं कि कहीं भी इसका अहसास नहीं होता है कि वे काल्पनिक हैं, क्योंकि स्वतंत्रता आंदोलन में सिखों का अमूल्य योगदान रहा है। वातावरण को सजीव बनाने के लिए रामनवमी पर्व एवं बैसाखी पर्व पर लोगों का सजधजकर निकलना, गुरुद्वारे में जाना, माथा टेकना, औरतों द्वारा बालों में रंगबिरंगी पराँदें बाँधना, किरकिली खेलना का चित्रण तथा 'घीसी कर ओये' हरे रब्बजी, मेरे ते रहम करी और देश भक्तिपरक पंजाबी गीतों के माध्यम से तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक सांस्कृतिक परिवेश से नाटककार ने रूबरू कराया है।

निष्कर्ष

लोककथा, पुराणकथा एवं ऐतिहासिक घटनाओं, प्रसंगों तथा चरित्रों की सहायता से भीष्म जी ने अपने मिथक नाटकों का सृजन किया है। कुछ नाटक ऐतिहासिक कम; काल्पनिक अधिक हैं तो कुछ ऐतिहासिक तथ्यों में जखडे हुए हैं। बावजूद इनमें युगीन परिवेश यथार्थ रूप में साकार हो उठा है। शासन की बर्बरता, निरंकुशता, साम्राज्यलिप्सा, तानाशाही, पुरुषी मानसिकता, स्त्री शोषण और राष्ट्रप्रेम जैसे महत्त्वपूर्ण तथ्यों को इन मिथक नाटकों द्वारा भीष्म साहनी ने उजागर किया है।

संदर्भ ग्रंथ

1. साहनी भीष्म, हानूश, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, चतुर्थ संस्करण–2002
2. साहनी भीष्म, कबिरा खडा बाजार में, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, तृतीय आवृत्ति–2002
3. साहनी भीष्म, माधवी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण–1984
4. साहनी भीष्म, रंग दे बसंती चोला, किताबघर प्रकाशन, दिल्ली–2002
5. साहनी भीष्म, आलमगीर, किताबघर प्रकाशन, दिल्ली–2003
6. गौतम (डॉ.) रमेश, मिथक और स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटक, नचिकेता प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण–1989
7. तनेजा (डॉ.) जयदेव, समकालीन हिंदी नाटक और रंगमंच, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण–2002
8. साहनी भीष्म, मेरे साक्षात्कार, किताबघर प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण–1996
9. साहनी भीष्म, अपनी बात, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण–2003

◆◆◆

डॉ. अशोक बाचुळकर
सहाय्यक प्राध्यापक एवं अध्यक्ष
हिंदी विभाग, आजरा महाविद्यालय,
आजरा (महाराष्ट्र)–416505
मोबाईल नंबर : 9423391579
avbachulkar1972@rediffmail.com